

### Tentative format for success stories – NMMI

#### Farmer's Name, Address & Contact Details

Farmer Name: Kanwar Singh Panu s/o Rangi Lal

Village : Furlak , (Gharonda), Karnal

Contact No. 09416005192



SN	Particulars	
<b>(A)</b>	<b>Crop Details</b>	
	Crop Name	Guava, Sapota, Jamun
	Variety	i)Guava-L-49 , Allahabadi Safeda, ii) Sapota -Cricket Ball, iii) Jamun Raya
	Soil type	Loamy Soil
	Total area (Ha.) available with the farmer	3.4 ha
	Area under crop (ha.) with micro irrigation	2.9 ha.
	Month/year of crop grown	Aug/2008-09
	Source of irrigation (borewell etc.)	Tube-well
	Type of irrigation system used (drip irrigation, sprinkler, mini sprinkler, micro sprinkler, any other)	Drip Irrigation
	Name of the micro irrigation system supplier	Harvel Agua India Pvt. Ltd
	Average no. of hours for which electricity is available per day	08 hours
<b>(B)</b>	<b>Main crop details</b>	
	Row/plant spacing (mxm)	4x4 and 8x8
	Water applied quarterly (approx.. litres per plant per day)	
	(a) January – February	30-40 ltr.
	(b) March – May	40-60 ltr.
	(c) June – September	60-40 ltr.
	(d) October – December	40-30 ltr.
	Whether fertilizer given through MI system (Yes/No). If yes, details of fertilizer and its doses.	No
	Yield of main crop (quintal/ha.)	210 quintal/ha.
	Pricing of main crop (quintal/ha.)	Rs. 1200/quintal, Rs. 252000/ha
	Gross revenue (Rs.)	7.3 lacs.
	Gross expenditure on production (Rs.)	2.0 lacs.
<b>©</b>	<b>Any intercropping, if taken,</b>	
	Crop Name	-
	Variety	-
	Row/plant spacing (mxm)	-
	Water applied quarterly (approx. litres per plant per day)	-
	(a) January – February	-
	(b) March – May	-
	(c) June – September	-
	(d) October – December	-
	Fertilizer given to MI system (Yes/No). If yes, details of fertilizer and its doses.	-
	Yield of main crop (quintal/ha.)	-
	Pricing of main crop (quintal/ha.)	-

	Gross revenue (Rs.)	-
	Gross expenditure on production (Rs.)	-
<b>(D)</b>	<b>Benefits experienced by farmer</b>	

सफल किसान की कहानी, उसी की जुबानी।

श्री कंवर सिंह पान्नु पुत्र श्री रंगी लाल

गांव— फुरलक, ब्लॉक घरौंड़ा, जिला— करनाल।

मोबाइल नंबर—09416005192

फसल— अमरुद (किस्म- एल—49 इलहाबादी), चीकू (किस्म- क्रिकेट बाल), व  
जामुन (किस्म- रया)

टपका सिंचाई प्रणाली से सात एकड़ बाग की खेती

फलों से पांच लाख रुपए की सीजन में कमाई

प्रकृति के हर जीव के लिए जल अति आवश्यक है, जल ही जीवन है कि कहावत हमेशा दोराही भी जाती है। जल के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। किंतु पानी की अधिक मात्रा और कभी सूखे के हालात फसल के तबाह होने का मंजर बन जाते हैं। ऐसे में पानी फसल को उतना ही मिले, जितनी उसको जरूरत फसल को है। इससे पानी की बचत तो होती ही है, साथ ही फसल की पैदावार बढ़ना भी लाजमी है।

वर्ष 2008—09 में सात एकड़ भूमि में लगाए बाग।

इस मिसाल पर जिला करनाल के गांव फुरलक के कंवर सिंह पान्नु सात एकड़ भूमि में लगे बाग को टपका सिंचाई प्रणाली से सींच रहे हैं। पेशे से वकील कंवर सिंह बताते हैं कि जिला उद्यान अधिकारी, करनाल से प्रेरणा लेकर उन्होंने वर्ष 2008—09 में सात एकड़ भूमि में बाग लगाए। इन बागों में अमरुद, चीकू, जामुन

शामिल है। उन्होंने बताया कि इससे पहले भूमि को लीज पर दिया हुआ था। किंतु लोज पर लिए लोगों ने अधिक कीटनाशकों का प्रयोग कर भूमि की माली हालत खस्ता कर दी थी। उद्यान विभाग के अधिकारियों से मिली सलाह से उन्होंने बाग लगाया और जैविक खादों को प्रयोग कर भूमि की हालत को सुधारा।

बाग के विकास में रहा सुनिश्चित पानी का योगदान



कंवर सिंह ने बताया कि बागों के विकसित होने में उस पानी का विशेष योगदान रहा, जो पानी टपका सिंचाई प्रणाली से पेड़ों तक पहुंचाया गया। जैसे बूंद-बूंद से सागर भरता है, उसी प्रकार टपका प्रणाली सिंचाई से मिलने वाली एक-एक बूंद ने पेड़ों के विकास में कड़ो का काम किया है। इसी की बदौलत पानी की बचत के साथ बिजली की बचत भी काफी हुई है। जरूरत अनुसार पानी पेड़ों को मिल पाया है। जबकि ट्यूबवेल से अधिक पानी मिलने से जहां पेड़ों के खराब होने की संभावना बनी रहती है, वहीं खतपतवार भी अधिक होती है। टपका सिंचाई प्रणाली ने इन समस्याओं से निजात दिलाई, जिसकी वजह से बागों का भरपूर विकास हो पाया।

फलों के बाग बेहतर कमाई का जरिया

कंवर सिंह पन्नू बताते हैं कि परंपरागत खेती की बजाय बागों की खेती बेहतर विकल्प है और सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली इस खेती में अहम रोल अदा करती है। उन्होंने बताया कि बागों से बढ़िया मुनाफा मिल रहा है। फलों के सीजन में 5 लाख रुपए आमदनी होती है। वह 250 क्विंटल प्रति हेक्टेयर पैदावार इन बागों से ली जा रही है। 2 लाख रुपए प्रति हेक्टेयर आमदनी इस फसल से ली जा रही है। इसके लिए उद्यान विभाग का सहयोग सराहनीय रहा है और टपका सिंचाई प्रणाली पर विभाग की ओर से अनुदान भी मिला है।

### दूसरे किसान भी हुए प्रेरित

कंवर सिंह के बागों के उत्पादन व कमाई को देखकर अन्य किसान भी प्रेरित हुए हैं। इस किसान की तरह मुनाफा कमाने की जिज्ञासा को लेकर उन्होंने भी बाग लगाने आरंभ किए हैं। जिला करनाल के गांव गगसीना निवासी शमशेर सिंह संधु ने भी अमरूद व चीकू के बाग लगाए हैं। जिसमें सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली को अपनाया गया है। उनकी तकनीक को देखने के लिए किसान अक्सर उनके फार्म का दौरा करने आते हैं। उन्होंने कहा कि किसानों को भी अपने खेतों में सिंचाई की यह तकनीक अपनाने के लिए आगे आना चाहिए। यह तकनीक किसानों के मुनाफे को लेकर काफी कारगर साबित हुई है।

### वर्मी कम्पोस्ट का किया प्रयोग

किसान ने बताया कि इन बागों के विकास में किसी प्रकार की अंग्रेजी व कीटनाशी दवा का प्रयोग नहीं किया गया है। वर्मी कम्पोस्ट की दो यूनिट बाग में लगाई गई है। इसी के जरिए बागों में जैविक खाद प्रयोग में लाई गई। इसके अलावा बागों को कीड़ों से बचाव के लिए भी देशी नुस्खे अपनाए गए हैं।

## सोलर फाइनेसिंग लगाकर बागों का बचाव

बाग का नील गाय से बचाव के लिए कंवर सिंह ने सोलर फाइनेसिंग का प्रयोग किया। इससे उनके बाग बिल्कुल सुरक्षित रहे और किसी प्रकार की हानि उनके बाग को नील गाय नहीं पहुंचा सकी।



उन्होंने बताया कि नील गाय के बचाव के लिए लगाई गई इस तकनीक को देखने के लिए दूर-दराज से लोग उनके बाग पर पहुंचते हैं। इस तकनीक पर ढाई लाख के लगभग खर्च आया है।

किसान की जुबानी से टपका सिंचाई के लाभ—:

1. पानी की बचत 60 से 70 प्रतिशत
2. उत्पादन में बढ़ौतरी
3. पौधों की जड़ों तक सही मात्रा में पानी मिलना।
4. उच्च गुणवत्ता के बागों का विकास।
5. खतपतवार की रोकथाम।
6. कीटों से बचाव।